आचार्य उमास्वामी (गृद्धपिच्छाचार्य)

जीवन-परिचय : आचार्य उमास्वामी का दूसरा नाम गृद्धपिच्छाचार्य भी प्रसिद्ध है। एक बार आचार्य उमास्वामी आकाशमार्ग से जा रहे थे, तभी उनकी मयूरपिच्छी गिर गयी, आचार्य प्राणियों की रक्षा में अत्यन्त सावधान थे। अतएव उन्होंने गृद्धपिच्छी (गिद्ध पक्षी के पंखों से बनी पिच्छिका) को धारण किया था। उसी समय से विद्वान लोग उन्हें गृद्धपिच्छाचार्य कहने लगे।

आचार्य उमास्वामी 40 वर्ष 8 महीने आचार्य पद पर प्रतिष्ठित रहे। उनकी आयु 84 वर्ष की थी। वे आचार्य कुन्दकुन्द के अन्वय में हुए हैं। भद्रबाहु द्वितीय, गुप्तिगुप्त, माघनन्दि, जिनचन्द्र और कुन्दकुन्दाचार्य की परम्परा में ही आचार्य उमास्वामी रहे हैं। आचार्य उमास्वामी ख्याति प्राप्त विद्वान हैं। साधुओं के अधिपति मोक्षमार्ग में उत्कृष्ट, विद्वानों द्वारा पूजनीय और जिनागम के पारगामी साधक रहे हैं।

नन्दिसंघ की पट्टावलि के अनुसार आचार्य उमास्वामी का समय ई. प्रथम शताब्दी का अन्तिम भाग या द्वितीय शताब्दी का पूर्वभाग माना जाता है।

रचना-परिचय : गृद्धपिच्छाचार्य श्री उमास्वामी की एक मात्र रचना 'तत्त्वार्थसूत्र' है। यह ग्रन्थ बहुत ही प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण है। जैन साहित्य में यह संस्कृतभाषा का एक मौलिक आद्य (प्रथम) सूत्रग्रन्थ है। एक लघुकाय सूत्र होते हुए भी इसकी रचना प्रौढ़ और गम्भीर है। यह ग्रन्थ जैन परम्परा में सर्वत्र समान रूप से मान्य है। हिन्दुओं में जो महत्त्व गीता का, मुसलमानों में कुरान का और ईसाइयों में बाइबिल का है, वही महत्त्व जैन परम्परा में तत्त्वार्थसूत्र को प्राप्त है।

इसका श्रद्धापूर्वक पाठ करने पर एक उपवास का फल मिलता है।

यह ग्रन्थ दश अध्यायों में विभक्त है, इसमें कुल 357 सूत्र हैं। इनमें जीव, अजीव आदि सात तत्त्वों का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है।